बाल साहित्य को सभी विधाओं में समृद्ध बनाने की जरूरत

हिंदी लेखिका संघ की कार्यशाला में विशेषज्ञों का मत

भोपाल, 09 दिसंबर. हिंदी लेखिका संघ की बाल साहित्य कार्यशाला दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में मंगलवार को आयोजित हुई. यहां देशभर से आए साहित्यकारों ने कहा कि आज बाल साहित्य को कहानी, कविता और नाटक से आगे बढ़ाकर सभी विधाओं में विकसित करने की आवश्यकता है. वक्ताओं ने बच्चों की कल्पनाशीलता, संवेदना, भाषा कौशल और बौद्धिक विकास को केन्द्र में रखकर नए और प्रासंगिक लेखन की आवश्यकता पर जोर दिया.

कार्यक्रम में साहित्य अकादमी (मध्यप्रदेश) के निदेशक और वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. विकास दवे ने कहा कि हिंदी बाल साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध है, लेकिन यह मुख्यत: कविता, कहानी और नाटक तक सीमित है. बाल मनोविज्ञान, विज्ञान-लेखन, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, जीवनी, हास्य-विनोद और अन्य विधाओं में भी रचनात्मक कार्य की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि बाल साहित्यकार को अपनी कल्पनाओं की खिड़की पूरी तरह खोलनी चाहिए और लेखन केवल सामान्य बच्चों तक सीमित न होकर मूक-बधिर व दिव्यांग

बच्चों के लिए भी होना चाहिए. बाल साहित्य को आनंददायक बनाना सबसे महत्वपूर्ण है.

संस्था अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि बाल साहित्य एक बीज की तरह है, जिसे यदि बाल-मन की गीली मिट्टी में बोया जाए तो भविष्य एक सुंदर बगिया बनकर विकसित होता है. उन्होंने कहा कि बाल साहित्य बच्चे के व्यक्तित्व, भाषा, विचार और मनोवैज्ञानिक विकास की पहली पाठशाला है. इसलिए लेखिकाओं का दायित्व है कि वे बाल मन को सही दिशा देने वाला संवेदनशील, मूल्यनिष्ठ और आनंददायक साहित्य रचें.

प्रथम सत्र में जबलपुर की बाल साहित्यकार डॉ. मंजरी शुक्ला ने कहा कि कहानियां बच्चे को कल्पना लोक की यात्रा कराती हैं, जहां परियां जादूगर, बोलने वाले पशु-पक्षी और उड़ने वाले ड्रैगन उसकी संवेदनाओं को विकसित करते हैं. उन्होंने कहा कि बाल साहित्यकार को बच्चों के मानसिक स्तर तक उतरकर लिखना जरूरी है, क्योंकि बच्चा प्रेम और संवाद को बिना किसी पूर्वाग्रह के अपनाता है. बाल साहित्यकार सुशील शुक्ला ने कहा कि भारत में अच्छा बाल साहित्य लिखा गया है, लेकिन मराठी, बांग्ला और मलयालम जैसी भाषाओं में इस दिशा में अत्यंत उल्लेखनीय काम हुआ है. उन्होंने सुधा चौहान, उपेंद्रनाथ अश्क और विभूति भौमिक की रचनाओं का संदर्भ देते हुए कहा कि बच्चों को समझने के लिए उनके साथ रहना और उनके परिवेश को जानना आवश्यक है. बच्चों को बताने के लिए बच्चों का अपना संसार ही पर्याप्त है.

महेश सक्सेना ने कहा कि बाल साहित्य से लोरी लगभग गायब हो चुकी है, जबकि यह मां और शिशु के बीच सबसे कोमल संवाद है, जो बच्चे के मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है.

> डॉ. रामवल्लभ आचार्य ने कहा कि पंचतंत्र, बेताल पच्चीसी, अकबर-बीरबल और अमीर खुसरो की कहानियां हमारी प्रतीक परंपरा को मजबूत बनाती हैं. उन्होंने कहा, जिस साहित्य में बच्चों के मन की बात हो, वही वास्तविक बाल साहित्य है. प्रथम सत्र का संचालन सुश्री सुनीता यादव और द्वितीय सत्र का संचालन कमल चंद्रा ने किया. स्वस्ति वाचन डॉ. रंजना शर्मा तथा आभार प्रदर्शन डॉ. नीलिमा रंजन ने किया. कार्यशाला में बड़ी संख्या में बाल साहित्यकार एवं लेखिकाएं उपस्थित रहीं.

शिल्प परंपरा को मिली ऊर्जा

एमएलबी कॉलेज की छात्राओं ने दीं आकर्षक प्रस्तुतियां

नवभारत प्रतिनिधि,
भोपाल, 9 दिसंबर. ऐतिहासिक गौहर महल में राष्ट्रीय हस्तशिल्प सप्ताह के तहत मंगलवार को सम्मान समारोह आयोजित किया गया. कार्यक्रम ने प्रदेश की शिल्प परंपरा को नई ऊर्जा दी और विभिन्न अंचलों से आए शिल्पियों के कौशल को मंच मिला. आयोजन भारत सरकार के हस्तशिल्प और वस्त्र मंत्रालय तथा प्रदेश के हाथकरघा और हस्तशिल्प विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया.

समारोह में जरी, गोंड पेंटिंग, ब्लॉक प्रिंट, लकड़ी के खिलौने, जूट और कॉटन, सिरेमिक और हैंड बटिक जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले 50 से अधिक शिल्पियों को सम्मानित किया

गया. इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव केसी गुप्ता ने कहा कि मध्यप्रदेश के हस्तशिल्प की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान लगातार बढ़ रही है. उन्होंने कहा कि प्रदेश की कलाकृतियां अब दिल्ली स्थित दूतावासों तक भी भेजी जा रही हैं और चीन के दूतावास में भी मध्यप्रदेश के शिल्पों की प्रदर्शनी लगाई जा रही है. इस मौके पर हस्तशिल्प निगम के प्रबंध संचालक और आयुक्त हाथकरघा मदन विभीषण नागर गोजे सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे.

> **गीत और नृत्य श्रृंखला ने दर्शकों का मोहा मन**
> इस अवसर पर एमएलबी कॉलेज की नृत्य विभाग की छात्राओं ने डॉ. विजया शर्मा के निर्देशन में कथक की मनोहारी प्रस्तुतियां दीं। शिव-वंदना से आरंभ होकर कृष्ण-भक्ति और राम-केंद्रित गीतों पर आधारित नृत्य श्रृंखला ने दर्शकों को भक्ति, भाव और लय के अद्भुत संसार में पहुंचाया। घुंघरुओं की मधुर झंकार और घूमरों की लय-लहरियों ने गौहर महल की ऐतिहासिक दीवारों में नृत्य की एक नई रोशनी भर दी। कार्यक्रम में शिल्पियों के योगदान को राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण आधार बताया गया।

दतिया में सजी संगीत सभाएं

भोपाल/दतिया। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा आयोजित होने वाला विश्व विख्यात तानसेन समारोह का 101वां संस्करण का आरंभ प्रादेशिक पूर्वरंग श्रृंखला के साथ हो गया है। इसके अंतर्गत मंगलवार को दतिया के अवध बिहारी मंदिर में संगीत सभाएं सजी। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ मां सरस्वती के माल्यार्पण के साथ हुआ। प्रथम प्रस्तुति में इंदौर से पधारे वायलिन वादक बृजमोहन बमरेले अपने वादन से सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने राग रागेश्री में विलंबित एकताल में आलाप व गत, तत्पश्चात द्रुत तीनताल में गत प्रस्तुत की।

कोलार में शिव महोत्सव का हुआ आयोजन

भोपाल, 9 दिसंबर. कोलार में इस वर्ष शिव बारात महोत्सव को पहले से अधिक भव्य रूप देने की तैयारी की जा रही है. लगातार नौवें वर्ष आयोजित हो रहे इस आयोजन की शुरुआत मंगलवार को रथ पूजन के साथ हुई. ग्यारह ब्राह्मणों की उपस्थिति में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजन संपन्न हुआ. कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष संजय सिंह राठौर सहित आयोजक सदस्य और क्षेत्र के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे.

संजय राठौर ने बताया कि रथ पूजन के बाद रुद्राक्षों का अभिषेक किया जाएगा और समिति के सदस्य उज्जैन और भोजपुर जाकर भोलेनाथ को आमंत्रण देंगे. इस वर्ष सवा लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण की शुरुआत भी की जाएगी. समिति सदस्यों के

> शिव बारात ललिता नगर चौराहा से शुरू होकर नया पूरा महाबली नगर और कोलार के विभिन्न क्षेत्रों से गुजरते हुए साईं नाथ कॉलोनी स्थित शिवहनुमान मंदिर पहुंचेगी जहां समापन होगा. इसके बाद श्रद्धालुओं को अभिमंत्रित रुद्राक्ष वितरित किए जाएंगे और मातृ शक्ति को कलश प्रदान किए जाएंगे. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समिति सदस्य और नागरिक उपस्थित रहे.

अनुसार कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ क्षेत्रीय विधायक रामेश्वर शर्मा करेंगे. मुख्य आयोजन पंद्रह फरवरी दो हजार छब्बीस को होगा जब प्रदेश की सबसे बड़ी शिव बारात निकाली जाएगी.

'एआई प्रो किट' से दृष्टिबाधित बनेंगे सक्षम

10 दृष्टि बाधित बच्चों को ज्योति एआई प्रो किट का वितरण | **12** श्रवण बाधित बच्चों को विशेष एप्स युक्त मोबाइल दिए

भोपाल, 09 दिसंबर. नवजीवन सेवा समिति और माता महालक्ष्मी अन्न क्षेत्र समिति के तत्वावधान में दिव्यांग बच्चों की शैक्षणिक एवं तकनीकी प्रगति के उद्देश्य से एक विशेष कार्यक्रम हुआ, जिसमें 10 दृष्टिबाधित बच्चों को अत्याधुनिक ज्योति एआई प्रो किट औ 12 श्रवण बाधित बच्चों को उनकी पढ़ाई और संचार को सरल बनाने के लिए आधुनिक मोबाइल फोन समिति अध्यक्ष सत्येंद्र अग्रवाल और नवनीत अग्रवाल ने दिए.

उन्होंने उपस्थितजनों को बताया कि नवीन तकनीक पर आधारित यह किट इन बच्चों के लिए तीसरे नेत्र की तरह कार्य करती है और उन्हें पढ़ाई तथा दैनिक कार्यों में पूर्णत: सक्षम बनाती है. समिति प्रवक्ता भगवान दास ढालिया ने बताया किट के माध्यम से बच्चे टेक्स्ट रीडिंग, वस्तु एवं रंग पहचान, मुद्रा पहचान के साथ ही दृश्य वर्णन जैसी सुविधाओं का लाभ ले सकेंगे. किट में विशेष एप्स इंस्टॉल किए हैं. इन मोबाइल में ऐसे एप्स उपलब्ध कराए गए हैं, जो इन बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को सहज, सरल और प्रभावी बनाते हैं.

> कार्यक्रम में विनय अग्रवाल, नीलिमा अग्रवाल, नवनीत अग्रवाल, भगवान दास ढालिया, राजीव दिवाकर, विनीता दिवाकर, रितेश खरे, प्रदीप विश्वकर्मा, मनोज चौकसे, मीरा कांटेवाला, नटवर कांटेवाला, स्पर्श भवन के दिव्यांग बालक-बालिका विद्यालय की अधीक्षिका लता मालाकार सहित अन्य शिक्षक, समाजसेवी तथा गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे.

अखिल भारतीय कायस्थ कवि समागम संपन्न

▶ **भोपाल के दुष्यंत नगर में हुआ कार्यक्रम**

भोपाल. अखिल भारतीय कायस्थ कवि समागम भगवान श्री चित्रगुप्त जी की अध्यक्षता एवं मां वीणा वादिनी के मुख्य अतिथ्यि में आयोजित हुआ

कार्यक्रम श्री रामसेवक बुंदेली साहित्य संस्कृति परिषद भोपाल द्वारा, आयोजित किया गया. उत्तर प्रदेश प्रयागराज, झांसी ललितपुर जयपुर राजस्थान मध्य प्रदेश डबरा ग्वालियर भोपाल विदिशा उज्जैन रतलाम भोपाल सहित 60 कवियों द्वारा काव्य पाठ किया गया.

भोपाल शाखा अध्यक्ष देवेश श्रीवास्तव देव सचिव ओ पी श्रीवास्तव कार्यक्रम संयोजक श्याम श्रीवास्तव सनम डबरा एवं सहसंयोजक मनीष बादल के संयोजन में आयोजित हुआ. इस अवसर पर महेश श्रीवास्तव राजेश चंचल, दिनेश प्रभात, राजेश श्रीवास्तव संजय श्रीवास्तव, महेश सक्सेना, अरविंद श्रीवास्तव, मुरलीमनोहर श्रीवास्तव, चंद्रशेखर श्रीवास्तव, मुकेश कबीर, अभय प्रधान, प्रेक्षा सक्सेना अभिलाषा श्रीवास्तव प्रियंका श्रीवास्तव, संगीत सरल, आलोक श्रीवास्तव के साथ 60 कायस्थ कवि उपस्थित रहे.

स्वदेशी रंग भोपाल नाम से दो दिवसीय प्रदर्शनी

भोपाल. शहर में स्वदेशी रंग भोपाल नाम से दो दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को व्यापार से जोड़कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है. इस कार्यक्रम में महिला उद्यमियों को अपने कार्य, कौशल और स्वदेशी उत्पादों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा, जिससे उन्हें बेहतर बाजार, निवेश और नए व्यवसायिक अवसर मिल सकेंगे. स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार से न सिर्फ छोटे व्यापारों को मजबूती मिलेगी बल्कि ग्राहकों को भी देसी गुणवत्ता और विविधता से रूबरू होने का अवसर मिलेगा.

भरेवा विरासत को मिली राष्ट्रीय पहचान

राष्ट्रपति ने मप्र के भरेवा शिल्पकार वाघमारे को किया सम्मानित

भोपाल, 09 दिसम्बर. मध्यप्रदेश की पारंपरिक जनजातीय भरेवा शिल्प कला की विरासत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को नई दिल्ली में मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के भरेवा शिल्पकार बलदेव वाघमारे को राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार से सम्मानित किया. उल्लेखनीय है कि हाल में भरेवा धातु शिल्प को जीआई टैग भी मिला है. केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह इस अवसर पर उपस्थित थे.

> **क्या है भरेवा**
> स्थानीय बोली में भरेवा का मतलब है भरने वाले. भरेवा कलाकार गोंड जनजाति की एक उप-जाति से संबंधित हैं, जो पूरे भारत में, खासकर मध्य भारत में फैली हुई है. धातु ढलाई का कौशल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता रहता है. भरेवा धातु शिल्प की परंपरा गोंड आदिवासी समुदाय के रीति-रिवाजों और परंपराओं के समानांतर चलती है.

खेल प्रतियोगिता ने दिव्यांगजन के आत्मविश्वास को बढ़ाया : सूर्यवंशी

भोपाल. निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने कहा है कि दिव्यांगजन के लिए खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन ना सिर्फ खेल भावना को बढ़ावा देता है बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के संकेत के साथ ही दिव्यांगजन के आत्मविश्वास को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाता है. सूर्यवंशी ने यह विचार उमंग इंटरनेशनल ट्रॉफी 2025 के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए व्यक्त किए. सूर्यवंशी ने इस अवसर पर दिव्यांग खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन भी किया. उमंग इंटरनेशनल ट्राफी 2025 के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर दिव्यांग खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया.

खेल-खिलौने पाकर खुशी से झूम उठे पीड़ित बच्चे

▶ **विश्व एड्स दिवस पखवाड़े के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम**
▶ **बच्चों और उनके माता पिता के लिए किया आयोजन**

नवभारत प्रतिनिधि
भोपाल, 9 दिसंबर . गांधी चिकित्सा महाविद्यालय भोपाल के मेडिसिन विभाग स्थित ए आर टी प्लस केंद्र में विश्व एड्स दिवस पखवाड़े के तहत सोमवार को पी एल एच आई वी बच्चों और उनके माता पिता के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया.

कार्यक्रम का शुभारंभ अधिष्ठाता प्रोफेसर डॉ कविता सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया. उन्होंने बच्चों के उत्साह और कार्यक्रम की उपयोगिता की सराहना की.

बच्चों के लिए नृत्य चित्रकला फैंसी ड्रेस और एच आई वी एड्स से संबंधित परामर्श गतिविधियों का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में बच्चों को खिलौने राशन स्वल्पाहार और कम्बल भी वितरित किए गए जिनकी व्यवस्था विभिन्न एनजीओ और दानदाताओं द्वारा की गई. आयोजन का उद्देश्य बच्चों को सकारात्मक वातावरण प्रदान करना और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाना रहा.

> इस अवसर पर मेडिसिन विभाग की विभागाध्यक्ष और ए आर टी केंद्र की नोडल अधिकारी प्रोफेसर डॉ सिम्मी दुबे उपस्थित रहीं. उनके साथ असिस्टेंट नोडल अधिकारी डॉ हिमांशु शर्मा वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ हेमंत वर्मा चिकित्सा अधिकारी डॉ कुलदीप वर्मा ए आर टी और सी एस सी केंद्र का समस्त स्टाफ और विभिन्न एनजीओ के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे. कार्यक्रम में बच्चों और अभिभावकों ने उत्साह से भाग लिया.

नाटक | हाय मार डाला रे में प्रेम और परिवार के रिश्तों की सजीव प्रस्तुति

कलाकारों के अभिनय को दर्शकों ने भावुकता के साथ समझा

नवभारत प्रतिनिधि,
भोपाल, 9 दिसंबर. मैं गूंगी होने को तैयार हूं मुझे पंख लगा दो, यह लाइन है मंगलवार शाम प्रस्तुत नाटक 'हाय मार डाला रे' की। रवींद्र भवन में मंगलवार शाम द बेक बेंचर्स मुंबई द्वारा नाटक की प्रस्तुति दी गई। नाटक में कलाकारों का अभिनय दर्शकों को भावनाओं और हास्य के ऐसे सफर पर ले गया। जिसे सभी ने हंसते मुस्कुराते और भावुकता के साथ समझा।

कहानी की शुरुआत बाबा पंजर की दुकान से होती है जहां साइकिल पंचर बनवाते हुए

नायक और नायिका की मुलाकात होती है। ऑरेंज गोली खाने और हल्की बातचीत से शुरू हुआ संवाद धीरे धीरे प्रेम में बदलता है। साइकिल संग चलने वाले छोटे छोटे दृश्यों ने दर्शकों को खूब आकर्षित किया। वहीं नाटक के दूसरे हिस्से में लेखक ने प्रेमी और प्रेमिका दोनों परिवारों के दृश्य को वास्तविकता से जोड़ने का प्रयास किया है। नाटक में प्रेम और पारिवारिक दबाव के बीच होने वाला संघर्ष बड़ी खूबसूरती से उभरते हुए दिखा। एक ओर मंच पर कलाकारों के सहज अभिनय ने पात्रों को जीवंत कर दिया। तो वहीं दूसरी ओर कलाकारों की चुटकुली बातों ने दर्शकों को खूब हंसाया।

> **दर्शकों ने प्रस्तुति को खूब सराहा**
> नाटक ने वर्तमान परिदृश्यों के कुछ विषयों को उकेरते हुए ये दिखाया कि हर प्रेम कहानी का अंत परियों वाली किताबों जैसा नहीं होता। कई बार सरल मुलाकातें कठिन मोड़ों तक पहुंच जाती हैं। जिसमें प्रेमी युगल के खिलाफ जाने वाले परिवारों को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ सकता है। नाटक के अंतिम दृश्यों ने दर्शकों को भावुक किया। साथ ही प्रेमी युगल की एक भयावह सोच को भी दिखाया। नाटक के अंत में दर्शकों ने प्रस्तुति को खूब सराहा और कलाकारों के ऊर्जा की प्रशंसा की।